आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 06/06/2023; Published: 24/06/2023

कविता

एक सिगनल की स्टोरी

- चंदना
सहायक प्रोफेसर
सुराना कॉलेज
मोबईल नंबर :- 9611677717
ईमेल :- chandana@suranacollege.edu.in

वह कान्हा से कम न था

महिने के हर रविवार सुबह

अमिरों के घर में चूला ना जलता था

घर के हर सदस्य एकत्र होने का दिन

परिवार के साथ बाहर नाश्ता करने का समय

अमीरपन दर्जाने की शौक मुझमें भी थी,

निकली अपनी लाल कार में

रफ़तार पकडते हुए रास्ते पर

अचानक दिखा लाल बत्ती

रुकनी पडी उस सिगनल में

बाये सिर्फ़ गाडियों की हार्न, तेज गति पकडत्ते

नज़रे टिकी बायी ओर, फुटपात पर

वह कान्हा ही था मुह खोलते, माटी खाते

सुबह के १०.००बजे के करीबन, खाने को कुछ नही मिला था शायद

माटी का स्वाद चकते वह २ साल का लडका

हाथ नही रुक रहा

लगातार माटी खाते भूख मिटा रहा

वह नन्हा कान्हा

वही सावले रंग, आकर्षक आँखे

घूघराले बाल, मीठी सी मुस्कान भरे चहरे

सूरदास के दैव, मीरा का गिरिधर

आज मुझे भी दिखा, संतृप्त चहरे लिये, माटी खाते हुए

अपना छवि मेरे दिमाग में धीरे से छापता गया

चार कदम की दूरी पर ही दिखी आज की यशोदा

अपनी लचारी पर हार मानते हुए, भांग पीते हुए

हरा बत्ती जल चुकी थी

मेरी लाल गाडी अपनी गति पकड चुकी थी, उस द्रुश्य को समेट्ते हुए

काल चक्र भी अपनी गति पकडी

पर आज भी वह दृष्य, नन्हा कान्हा, भाँग की नशीली माँ

ओझल ही नही हुए आँखों से

शायद लिखूँगी तो, दिमाग से मिट जाये

इसलिये लिखि "वह सिगनल की स्टोरी"

नही तो लिखना मेरा शौक नही था।

****